बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा

अधिन्यास पत्र कक्षा चौथी ६.०५.२०२०

विषय -आत्मकथा उपविषय - जब मैं पढ़ता था

केवल पठन

निर्देश:

- यह पाठ केवल पठन हेतु है | शुद्ध उच्चारण का ध्यान रखते हुए ऊँचे स्वर में पाठ को पढ़ें ।
- पाठ से संबंधित नवीन शब्द उत्तरपुस्तिका में लिखें व उन्हें याद करें |

पाठ उद्देश्य:

- विद्यार्थी अनुशासन ,शिष्टता ,आदि गुणों का विकास कर सकेंगे |
- गाँधी जी के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी बातों को विद्यार्थी जान सकेंगे |

पाठ सार:

गाँधी जी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ में पोरबंदर ,गुजरात में हुआ था |उनके पिता का नाम करमचंद गांधी था जो सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले साहसी व्यक्ति थे | उनकी मातजी का नाम पुतली बाई था जो ईश्वर में आस्था रखती थीं | गांधीजी होशियार विद्यार्थी नहीं थे परंतु अपने आचरण का बहुत ध्यान रखते थे | वे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहते थे जिससे कि उन्हें शिक्षक के सामने अपमानित होना पड़े | विद्यार्थी जीवन में व्यायाम को उन्होंने अत्यंत आवश्यक बताया |उनके विद्यार्धी जीवन में विद्यालय में क्रिकेट और व्यायाम को अनिवार्य कर दिया गया था | गांधी जी इससे जी चुराते थे लेकिन बड़े होकर उन्होंने जाना कि खुली हवा में घूमना , व्यायाम करना स्वास्थ्य के लिए बेहद ज़रूरी है |

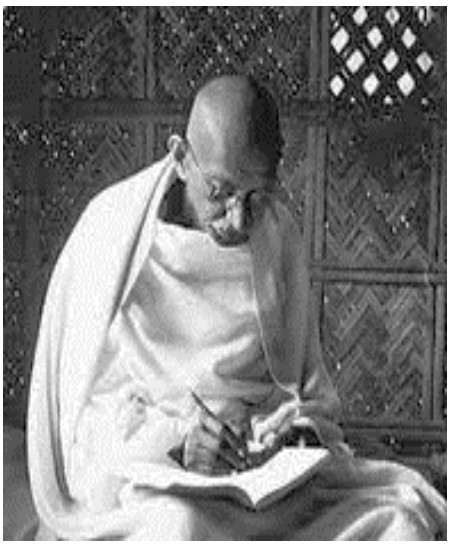

इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका की अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने जाना कि सुंदर ,सटीक अक्षर बनाने के लिए चित्रकला की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है | उनका मानना था कि बच्चों को मातृभाषा के साथ - साथ ही हिंदी, फ़ारसी, संस्कृत आदि भाषाओं का भी ज्ञान होना चाहिए |

आइए सीखें ::--

नवीन शब्द :

१) सत्यप्रिय	२) साहसी	३) स्वभाव
४) मंदबुद्धि	५) विद्यार्थी	६) छात्रवृत्ति
७) शिक्षक	८) व्यायाम	९) कसरत
१०) हेडमास्टर	११) स्वास्थ्य	१२)विलायत
१३) चित्रकला	१४) मातृभाषा	१५) उपकार

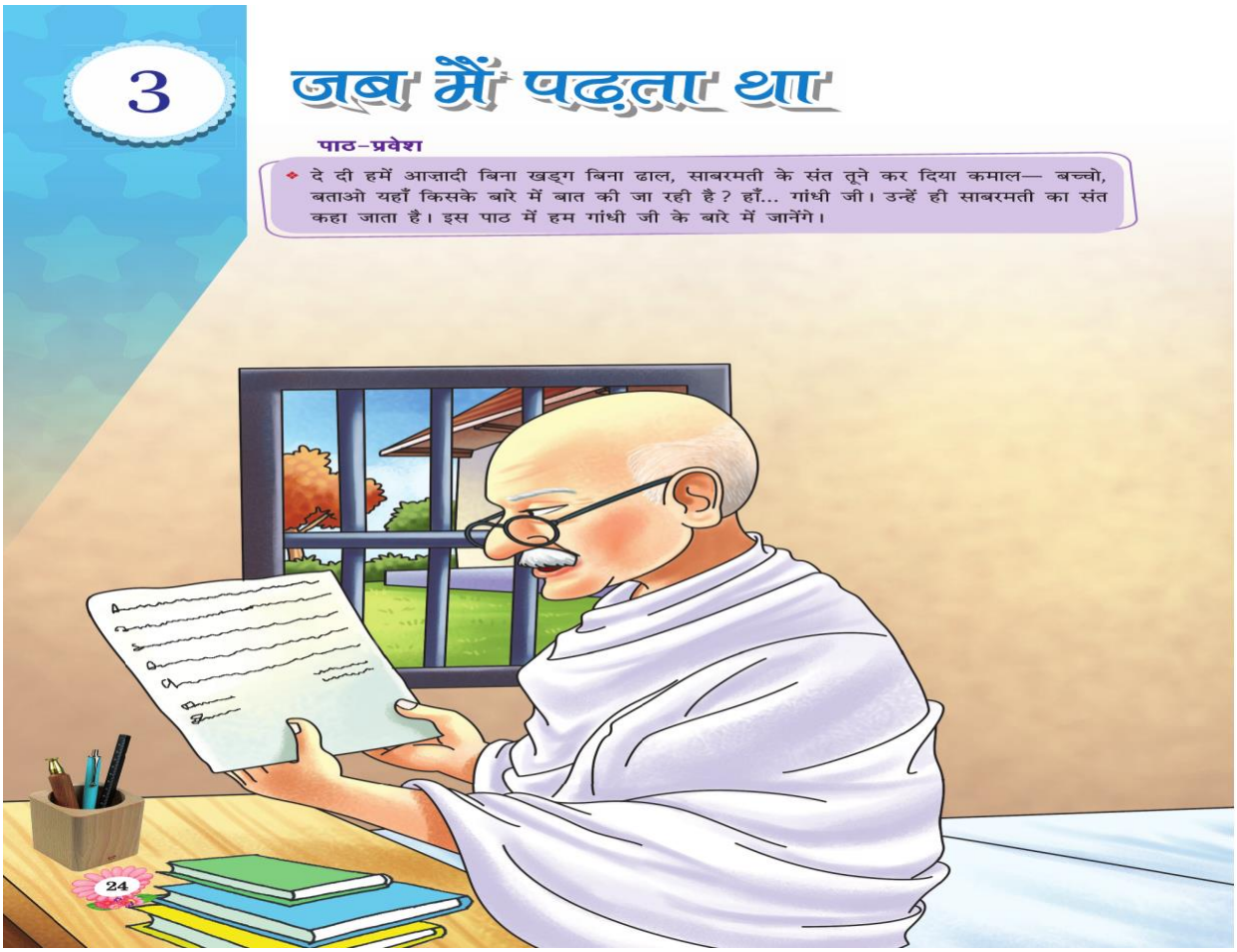

मेरे पिता का नाम करमचंद गांधी था। वे राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे बहुत न्यायप्रिय थे। मेरी माता का नाम पुतलीबाई था। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। पूजा-पाठ किए बिना वे भोजन नहीं करती थीं।

मेरा जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में हुआ। वहाँ से पिता जी जब राजकोट गए, तब मेरी उम्र सात वर्ष रही होगी। एक-एक कक्षा पार करके मैं हाई स्कूल में आ गया।

मैं हाई स्कूल में मंदबुद्धि विद्यार्थी नहीं माना जाता था। मुझे अपनी होशियारी का कोई गर्व नहीं था। इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था। अपने आचरण की मुझे चिंता रहती थी। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो जिसके लिए शिक्षक मुझे दंड दें, यह मेरे लिए असहनीय था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुख न था। पर मैं दंड का पात्र समझा गया, इस बात का बहुत दुख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। हमारे मुख्याध्यापक ने ऊपर की कक्षा के छात्रों के लिए व्यायाम और क्रिकेट को अनिवार्य कर दिया था। मेरा मन इनमें न लगता था। खेलना अनिवार्य होने के पहले मैं कभी व्यायाम करने या क्रिकेट खेलने गया ही नहीं था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति मेरी यह अरुचि एक गलती थी। पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत ज़रूरी है।

एक शनिवार को शाम चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे। इससे समय का पता न चल सका। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे न आने का कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना। मुझे दंड भुगतना पड़ा। मुझे बेहद दुख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ, यह कैसे सिद्ध करूँ? कोई उपाय न था। मैं मन मारकर रह गया। बाद में समझा कि सच बोलनेवाले को कभी भी असावधान नहीं रहना चाहिए। कसरत में न जाने से मुझे नुकसान नहीं हुआ क्योंकि मैंने कसरत से तो मुक्ति प्राप्त कर ही ली। पिता जी ने हेडमास्टर को पत्र लिखा कि स्कूल के समय के बाद वे मेरी उपस्थिति का उपयोग अपनी सेवा के लिए करना चाहते हैं। इस कारण मुझे मुक्ति मिल गई।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर तगड़ा हो गया यानी व्यायाम के बदले मैंने टहलने का सिलसिला रखा, इसलिए शरीर को व्यायाम न देने की गलती के लिए तो शायद मुझे सज़ा नहीं भोगनी पड़ी, पर एक गलती की सज़ा मैं आज तक भोग रहा हूँ। मैं यही जानता था कि पढ़ाई में सुंदर लेखन ज़रूरी नहीं है। विलायत जाने तक यह विचार बना रहा। बाद में, और खास करके दक्षिण अफ्रीका में, जब मैंने वकीलों और अन्य पढ़े-लिखे नवयुवकों के मोती के दानों-जैसे अक्षर देखे, तो मैं शरमाया और पछताया। मैंने अनुभव किया कि खराब अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी मानी जानी चाहिए। बाद में मैंने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया, पर पका घड़ा कहीं चाक पर चढ़ता है! सभी मेरे उदाहरण से सबक लें और समझें कि अच्छे अक्षर विद्या का आवश्यक अंग हैं। अच्छे अक्षर सीखने के लिए चित्रकला आवश्यक है इसलिए बालकों को चित्रकला पहले सिखानी चाहिए। जिस तरह पक्षियों, वस्तुओं आदि को देखकर बालक उन्हें याद रखता है और आसानी से पहचानता है, उसी तरह जब चित्रकला सीखकर चित्र आदि बनाने लगे तभी अक्षर पहचानना और लिखना सीखे, तो उसके अक्षर छपे अक्षरों के समान सुंदर होंगे।

इस समय के विद्याध्ययन के कुछ संस्मरण और भी उल्लेखनीय हैं। छठी कक्षा में मेरे संस्कृत-शिक्षक कृष्णशंकर मास्टर बहुत कड़े मिज़ाज के थे। विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक सिखाने का प्रयास करते थे। परंतु मैंने संस्कृत की कक्षा छोड़कर फ़ारसी की कक्षा में बैठना शुरू कर दिया। फ़ारसी के मौलवी बहुत नरम दिल के थे लेकिन इस बात से संस्कृत शिक्षक को बहुत दुख हुआ। उन्होंने मुझे समझाया, "मैं तो सब छात्रों को बढ़िया संस्कृत सिखाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस के घूँट पीने को मिलेंगे। तुम्हें यूँ हारना नहीं चाहिए। तुम फिर से मेरी कक्षा में आकर बैठो।"

मैं आज कृष्णशंकर मास्टर का उपकार मानता हूँ क्योंकि जितनी संस्कृत मैं उस समय सीखा उतनी भी न सीखा होता, तो आज संस्कृत शास्त्रों का रस न ले पाता। अब तो मैं यह मानता हूँ कि भारत वर्ष के पाठ्यक्रम में मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी का स्थान होना चाहिए। भाषाओं की इस संख्या से किसी

को डरना नहीं चाहिए। भाषा पद्धतिपूर्वक सिखाई जाए और सब विषयों को अंग्रेज़ी के माध्यम से सीखने-सोचने का बोझ हमपर न हो, तो ये भाषाएँ सीखने में बहुत ही आनंद आएगा। जो व्यक्ति एक भाषा को शास्त्रीय पद्धति से सीख लेता है, उसके लिए दूसरी भाषा का ज्ञान सुलभ हो जाता है।

—मोहनदास करमचंद गांधी